

Explanation of the chapter

नादान दोस्त एक बाल कहानी है जिसमें प्रेमचंद जी ने केशव और श्यामा नामक दो भाई बहनों की नादानी का वर्णन किया है। केशव के घर की कार्निंस पर एक चिड़िया ने अंडे दिए थे जिन्हें देखने के लिए केशव और श्यामा बार-बार घर से बाहर कार्निंस की ओर देखते थे। चिड़िया को देखने में वे इतने मग्न हो जाते कि अपना दूध और जलेबी का नाश्ता भी भूल जाते। उनके मन में तरह-तरह के सवाल उठते जैसे अंडों का आकार कैसा होगा, उनका रंग कैसा होगा, अंडे कितने होंगे, उनमें से बच्चे कब निकालेंगे, बच्चों के पर कैसे होंगे, वे किस प्रकार उड़ेंगे आदि। उनके इन सवालों का जवाब देने का किसी के भी पास वक्त नहीं था क्योंकि उनके पिताजी दफ्तर के कामों में व्यस्त रहते और माता जी को घर के कामों से फुर्सत ना थी। दोनों बच्चे आपस में ही सवाल जवाब करके अपने आपको तसल्ली दे दिया करते।

दो-तीन दिनों के बाद दोनों बच्चों के मन में अंडों को देखने की लालसा उत्पन्न हुई। उन्होंने अनुमान लगा लिया था कि अब तक अंडों से बच्चे निकल आए होंगे। केशव और श्यामा को चिड़िया के बच्चों की चिंता सताने लगी। चिड़िया के बच्चे क्या खाएँगे, कैसे रहेंगे, प्यास लगने पर पानी कहाँ से पीएँगे, इन प्रश्नों उन्हें परेशान कर दिया। अंडों को इन परेशानियों से बचाने के लिए केशव और श्यामा ने उनकी मदद करने की सोची। उन्होंने मिलकर चिड़िया के बच्चों के लिए कार्निंस पर चावल के दाने और पानी रखने की सोची। जब चिड़िया के बच्चों के लिए पानी और चावल के दानों का प्रबंध हो गया तो केशव ने उसे कार्निंस पर रख दिया। कार्निंस पर जब केशव ने देखा तो उसे अंडे तिनकों पर पड़े दिखाई दिए। केशव ने उन अंडों के लिए एक कपड़े की गद्दी बनाई और उसे अंडों के नीचे रख दिया और उन अंडों के लिए छाया का भी प्रबंध कर दिया गया ताकि अंडे आराम से रह सकें। सारा प्रबंध करने के बाद केशव और श्यामा सोने के लिए चले गए। जब शाम को वे दोनों सो कर उठे तो उन्होंने देखा कि चिड़िया के अंडे नीचे गिरे थे। केशव को यह सब देख कर बहुत दुख हुआ। इतने में माँ वहाँ आ जाती है और चिड़िया के टूटे हुए अंडों को देखकर केशव और श्यामा से पूछती है कि क्या उन्होंने अंडों को हाथ लगाया था? श्यामा शिकायत भरे लहजे में माँ से कहती है कि केशव ने अंडों को हाथ लगाया था। सब बातें जाने के बाद माँ उन दोनों बच्चों को बताती है कि चिड़िया के अंडों को हाथ लगाने से अंडे गंदे हो जाते हैं और उसके बाद चिड़िया उनको नहीं सेती। तब केशव माँ को मासूमियत से जवाब देता है कि वह तो अंडों की हिफाज़त करना चाहता था। केशव की बात सुनकर माँ हँस देती है। केशव को काफी दिनों तक अपनी गलती का अफसोस होता है और उसके बाद चिड़िया वहाँ दुबारा कभी नज़र नहीं आई।